Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 4 | ISSUE : 6 | JUNE 2018

भारत की प्रागैतिहासिक चित्रकला : एक सूक्ष्म चित्रण

हुक्मा राम रेगर [1]

[1] **सह आचार्य इतिहास, राजकीय महाविद्यालय जैतारण राजस्थान**

ABSTRACT

कला का व्यापक रूप कल्याण की अभिव्यक्ति करना है। कला मानवीय विचारों की, कल्पनाओं की, अनुभूतियों की, आनंदातिरेक की अभिव्यंजना है। कला का उद्गम सौंदर्य की मूलभूत प्रेरणा का परिणाम है। प्रत्येक कलात्मक प्रक्रिया का उद्देश्य सत्यम शिवम सुंदरम की अभिव्यक्ति है। इसी से अभिभूत होने वाली भारतवर्ष की संस्कृति आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों में अभिव्यक्त हैं। इससे देश के मानसिक एवं वैचारिक विकास का प्रतिपादन होता है। देश की संस्कृति का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रागैतिहासिक कला का ज्ञानावलोकन उल्लेखनीय हैं। प्रागैतिहासिक कला में समाज, धर्म एवं राजवंशों का यथार्थ चित्रण समाहित है। अतः प्रागैतिहासिक कला मानव संस्कृति को समझने का मूल आधार है, जिसमें देश का मानचित्र पत्थर की शिला पर छेनी हथौडी, कूची एवं रंग के रूप में प्रदर्शित होता है।

प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला का अध्ययन हमें तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों से जोड़ता है। आदिकालीन चित्रकला, विषयवस्तु तथा सामग्री तत्कालीन समय के जनजीवन, उनके कार्य तथा संस्कृति के जीते-जागते चित्र हैं। जो न केवल आदिकालीन मानव के रहन सहन को दर्शाते हैं वरन् क्रमिक विकास की व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं। ये चित्र मोटी, टेढी, तिरछी और अस्पष्ट रेखाओं के द्वारा उस सभ्य मानव की विषयानुभूति को व्यक्त करते हैं। कि, किस प्रकार मानव विषम परिस्थितियों में अस्त व्यस्त और अव्यवस्थित था। फिर भी उसमें सृजन की प्रवृत्ति अंकुरित हो रही थी। प्रागैतिहासिक शिलाचित्रों में पर्याप्त सृजनशीलता, मौलिक उद्भावना, अंतरंग सौन्दर्यबोध, रूपविन्यासगत वैविध्य, अभिव्यक्ति, रचना कौशल और निजी वैशिष्ट्य उपलब्ध होते हैं। अतः इन चित्रों की सरलता, सुगमता तथा सूक्ष्म रेखांकन पद्धति आज भी कलाकार के लिए महान प्रेरणा का स्रोत हैं।

Keywords: भारत, प्रागैतिहासिक चित्रकला, संस्कृति, सूक्ष्म चित्रण, परम्परा

मूल आलेख प्रस्तुति

भारत के विभिन्न अंचलों में प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्र मानव जाति के प्रारम्भिक जीवनयात्रा की विशद कहानी प्रस्तुत करते हुए दृष्टिगोचर होते है जिनके द्वारा आदिमानव के उल्लासमय जीवन के आन्तरिक भावों की सफलतम अभिव्यक्ति दिखाई पडती है। हिन्दी का प्रागैतिहास (प्राक् + इतिहास) प्रीहिस्ट्री का शाब्दिक अनुवाद है। जिसका सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1851 में डेनियल विल्सन ने अपनी पुस्तक 'दी आर्कयोलाजी एण्ड प्रीहिस्टारिक एनाल्स ऑफ स्काटलैण्डे में किया था।

प्रागैतिहासिक चित्रकला काल विभाजन

सहस्रों वर्षों की लम्बी इस कालावधि में जल तरंगों के समान फैली इस प्रागैतिहासिक चित्रकला को तीन निम्नांकित खण्डों में विभाजित कर सकते हैं-

1. पूर्व पाषाणकाल या पुरातन प्रस्तर युग, 'मेगालिथिक एज' (30,000 ई०पूर्व से 25000 ई०पूर्व)
2. मध्य पाषाणकाल या मध्य प्रस्तर युग, मेसोलिथिक एज' (25000 ई० पूर्व से 10000 ई० पूर्व)
3. \उत्तर पाषाण काल या नव प्रस्तर युग, नियोलिथिक एज' (10000 बी0सी0 से 3000 ई० पूर्व)

प्रागैतिहासिक काल के नव प्रस्तर युगीन मानव ने भारत के सैकड़ों स्थानों पर चित्रावशेष छोड़े हैं। अतः यहाँ पर इस युग की चित्रकला के प्रमुख उदाहरण हमें 'बेलारी' 'बाडनाड', 'एडकल, सिंघनपुर, बुन्देलखण्ड तथा 'विन्ध्याचल', 'मिर्जापुर', 'रामगढ', 'विलासरंगम' आदि स्थानों पर प्राप्त होते हैं।

प्रागैतिहासिक चित्र निर्माण प्रक्रिया

भारत में प्राप्त प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला की निर्माण प्रक्रिया में अधिकांशतः गुफा चित्रों के निर्माण में लाल, गैरिक (गेरुआ). सफेद, कत्थई, नीला, पीला आदि खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न स्थलों में पहले लाल या सफेद रंग को पृष्ठभूमि पर आलेपन कर उसके ऊपर अन्य रंगों से चित्र बनाए गए हैं। संभवतः चित्रों को बनाने में तूलिका, कूची, ब्रुश अथवा दातून के आकार वाली टहनियों, हाथों की ऊँगलियों का भी प्रायोग किया गया है। इस प्रकार मन की सुंदर अभिव्यक्तियों को भारतीय चित्रकला में आकार प्रकार दिया गया है।

प्रागैतिहासिक कालीन प्रमुख भारतीय चित्रकला क्षेत्र

मिर्जापुर क्षेत्र :-

भारत में प्रागैतिहासिक चित्रकला की सर्वप्रथम खोज मिर्जापुर क्षेत्र में हुई । आर्चीबल कार्लाइल तथा जान काकबर्न ने सन् 1880 में इसी क्षेत्र के कैमूर पहाड़ियों से प्रागैतिहासिक चित्रों को खोज निकाला था।

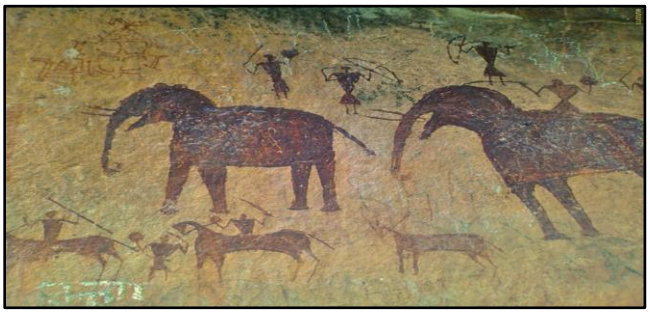

लखनिया दारी गुफा कला

मिर्जापुर जिले से एक सौ से अधिक चित्रित गुफायें तथा शिलामय चित्रकला को प्राप्त किया गया है मिर्जापुर जिले में कोहबर, महडरिया, भल्डरिया, विजयगढ़, छातों, विढम, लिखनिया लौहरी, खाडहवा. कडाकोट, सोरहोघाट, कोडमंगर एवं पमोसा (चुनार) आदि स्थान आदिम मनुष्य के प्रमुख केन्द्र थे। मिर्जापुर क्षेत्र में आदिम गुफाओं में अधिकांशतः चित्र गैंडा, हिरण, सूअर तथा बारासिंघा आदि पशुओं के रूप में उकेरे गए हैं जो अपनी यथार्थता से परिपूर्ण होने के कारण मानव मन को आकर्षित कर लेने वाले हैं।

पंचमढ़ी

महादेव पर्वत श्रृंखला में अवस्थित यह स्थान पंचमढ़ी के आस पास लगभग 5 मील के घेरे में 50 के करीब दरियाँ (गुफाओं) से मण्डित हैं। इन सभी में महत्वपूर्ण प्रागैतिहासिक चित्र उपलब्ध हुए हैं। यहाँ के शैलचित्रों को प्रकाश में लाने का सर्वप्रथम श्रेय डॉ० जी०आर० हंटर को है। पंचमढ़ी के विभिन्न शिलाश्रय तथा गुफाओं में पशु के झुण्ड चित्रित किये गये हैं। इसी के साथ दैनिक जीवन के चित्र जैसे गाय को चराते हुए तथा शहद इकट्ठा करते हुए मनुष्यों का अंकन विशेष उल्लेखनीय है। यहाँ पर पशु तथा आखेट चित्रों के अतिरिक्त सशस्त्र युद्ध दृश्यों, तथा नृत्यावदन के चित्र मिलते हैं। पचमढी क्षेत्र के शिला-चित्रों की उपलब्धि की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

भीमबेटका : -

मध्य प्रदेश के विन्ध्य पर्वत श्रेणी में स्थित भीमबेटका भोपाल से 45 किमी0 दक्षिण-पूर्व और होशंगाबाद से 30 किमी0 उत्तर पश्चिम में स्थित है। भीमबेटका अर्थात् भीम के बैठने का स्थान जिसके सम्बन्ध में मान्यता है कि महाभारत काल में यहाँ कभी पांडवों ने निवास किया होगा। यह स्थल आदि मानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों और शैलाश्रय के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्य पाषाण काल के बीच का माना जाता है। इनकी खोज वर्ष 1957-58 में डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर के द्वारा की गई थी।

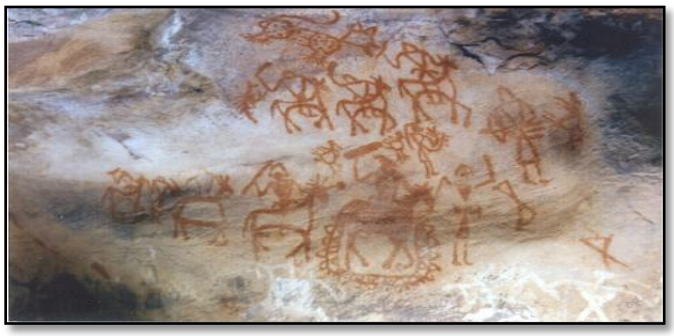

भीमबैठका के शैलचित्र

भीमबेटका की प्रागैतिहासिक चित्रकला वास्तव में सच्चे अर्थों में लोक कला है जिसमें अत्यंत सरल जीवन व्यतीत करने वाले वनवासियों ने स्वांतः सुखाय अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया है।

प्राकृतिक लाल और सफ़ेद रंगों से वन्यप्राणियों के शिकार करते हुए भीमबैठका का शैलाश्रय

मन्दसौर :-

मन्दसौर जिले में 'मोरी स्थान पर बने गुहा चित्र भी प्रसिद्ध हैं। यहाँ 30 पहाड़ी खोहे हैं जिनमें प्रमुख रूप से स्वास्तिक', 'चक्र', 'सूर्य', 'सवतोभद्र', 'अष्टदल' 'कमल' व 'पीपल की पत्तियों के प्रतिकात्मक चिन्ह हैं। 'देहाती बॉस से बनाई गाड़ियाँ भी यहाँ चित्रित हैं।

सिंघनपुर :-

सिंघनपुर के महत्वपूर्ण शैल चित्रों की खोज सन् 1910 ई0 में एण्डर्सन महोदय ने किया। उसके बाद 1913 में अमरनाथ ने तथा 1917 ई0 में पर्सी ब्राउन ने इन चित्रों का परिचय दिया। सिंघनपुर छत्तीसगढ़ की रायगढ़ रियासत में मॉठ नदी के किनारे पूर्व की ओर स्थित हैं। सिंघनपुर ग्राम में 'पचास चित्रित शिलाश्रय एवं गुफाएँ मिली हैं। इसके द्वार पर 'असंयत कंगारू' के चित्र चित्रित हैं। सिंघनपुर के पास एक सुरंगनुमा गुफा में पशुओं का अंकन बहुतायत में है, जिसमें 'घोड़ा, बारहसिंगा हिरण 'भैंसा' सांड' 'सूँड उठाये हाथी' तथा 'खरगोश आदि का सजीव चित्रांकन है।

रायगढ़ :-

रामगढ़ मध्यप्रदेश का प्रमुख जनपद है। यहाँ से प्रागैतिहासिक चित्रकला के उदाहरण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं। यहाँ कबरा पहाडी क्षेत्रों व सिंघनपुर गाँव के निकट कुछ दरियाँ मिली हैं। इसी के पास बातालदा' की विशाल गुफा में हिरण, छिपकली व जंगली भैंसे का अंकन है। अन्य चित्रों में नाचते, युद्ध करते एवं पालतू पशुओं के सजीव चित्र हैं। ये चित्र गेरू तथा रामरज जैसे भूरे रंगों में बने हैं।

प्रागैतिहासिक चित्रकला की विवेचना करने के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आदिम मानव के द्वारा प्रसूत कला 'लोक कला के प्रारम्भिक लक्षणों का एक सूत्र है। प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युग में ये रेखाचित्र, सपाट, उत्खनित शिला चित्रों से आश्रय स्थली चट्टानों पर चित्रित रेखाचित्रों तक और फिर गुफाओं की दीवारों और छतों तक निरन्तर विकास करते रहे हैं तथा मनुष्य की कला के प्रति आकर्षण तथा सौन्दर्य की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करते रहे हैं। इन चित्रों से प्रागैतिहासिक कालीन जन-जीवन में लक्षित प्रतीकात्मकता निश्चय ही उस समय के मानव के आस्था व विश्वास की कहानी है। प्रागैतिहासिक चित्र विषय शैली तथा सामग्री के दृष्टिकोण से उस समय के जनजीवन और उनके कार्य संस्कृति के जीते जागते चित्र प्राप्त होते है जो प्रागैतिहासिक कालीन मानव की जीवन शैली को दर्शाते हैं और उनके क्रमिक विकास की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

प्रागैतिहासिक चित्रकला की परम्परा मनुष्य की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर है। उसमें व्याप्त भित्तिचित्र हमारी कला की महान विरासत है जिनका संरक्षण हमारा प्रथम दायित्व है। संरक्षण से तात्पर्य है किसी वस्तु को उसके मूल स्वरूप में बनाए रखना है। संरक्षण में उन सभी प्रक्रियाओं को भी शामिल किया जाता है जो इस भारतीय चित्रकला के रख-रखाव व उनके सांस्कृतिक महत्व को संरक्षित रखने के लिए प्रयोग में लाये जाते है। भारतीय चित्रकला हमारे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। अतः उनका संरक्षण हमारा प्रथम कर्तव्य है।

निश्चित ही भारतवर्ष चित्रकला की परम्परा में विश्व का सबसे समृद्धशाली एवं सुसंस्कृत देश है। जिसने अपनी कलात्मक प्रतिभा से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित कर रखा है। सनातन काल से चली आयी परम्पराओं का निरन्तर प्रवाह भारतवर्ष की अद्वितीय विशेषता रही है। जिसके द्वारा आज भी यह देश अपनी कला और संस्कृति को अक्षुण्ण रख सका है। सभ्यता एवं संस्कृति के अनन्त काल-प्रवाह में अपनी पुरातनता के प्रति यह देश सदा जागरूक रहा और यही कारण है कि इस देश ने अपनी सांस्कृतिक परम्परा को बनाये रखते हुए नित नवीनता की ओर सधे हुए कदमों से आगे बढ़ाया है। भारतवर्ष की प्रागैतिहासिक चित्रकला का स्वरूप आज भी समुज्ज्वल है।

REFERENCES

1. संकालिया, हंसमुख धीरज लाल, - दी प्रिहिस्ट्री एण्ड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ इंडिया एण्ड पाकिस्तान, पूना 1974.

2. प्रताप, रीता, - भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास।

3. राघव, रांगेय, - प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास।

4. गुप्त, दिनेश चन्द्र, - भारत की चित्रकला, धर्मा प्रकाशन।

5. अग्रवाल, श्याम बिहारी, - भारतीय चित्रकला का इतिहास।

6. सम्मेलन पत्रिका: कला विशेषांक "भारत के कला मण्डप।

7. इरविन न्यूमेकर- प्रिहिस्टोरिक इंडियन पेंटिंग, दिल्ली, 1983.

8. अग्रवाल, श्याम बिहारी, - भारतीय चित्रकला का इतिहास।

9. जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1883, वाल्यूम 52, पार्ट 2.

10. बीएस० वाकन्कर- राक शैल्टर इन मध्य प्रदेश आई0ए0आर0. 1956-57.